मनु–शतकम्

मनु–स्मृति में से 100 उपयोगी सूत्र

संकलन एवम् अनुवाद :
वैद्य नंद लाल शर्मा
प्रधान श्री ब्राह्मण समाज पटियाला
संयोजक : सर्व ब्राह्मण तालमेल समिति पटियाला
पता : मकान नं.13, सर्कूलर रोड़, सुन्दर नगर, पटियाला–147001
(पंजाब) भारत। फोन : 0175–2370794

संपादन सहयोग :
महेश बातिश
मंडी गोबिन्दगढ़। (पंजाब) भारत
मोबाईल : 0091 98881 71331

अनुक्रमणिका

आमुख

ब्रह्म

संसार का विस्तार

दिन–रात

वर्णाश्रम

आचार महिमा

कर्म का कारण

दृढ़निश्चय द्वारा ही इच्छापूर्ति संभव है

धर्म के लक्षण

चारों वर्णों का धर्म

धर्मपालन से स्वर्ग सुख

धर्मप्रचार में आप भी हमारे सहयोगी बन सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :

Mahesh Batish, Vishavkarma Nagar, Main Street,
Mandi Gobindgarh-147301 (Punjab) India   Cell : +91 98881 71331
E-mail : maheshbatish@rediffmail.com, maheshbatish@yahoo.com
Visit our Home page at : www.geocities.com/dharamvichar

धर्मपालन से आत्मरक्षा

धर्म ही सहायक

भोजन महत्ता

अतिभोजन से हानि

पापी को सफलता नहीं

जितेन्द्रिय

जितेन्द्रिय का महत्व

व्यर्थ न बोलें

वृद्धसेवा का लाभ

पिता

महानता

इन चार का सम्मान करें

इनका अपमान न करें

सर्वश्रेष्ठ तप

माता, पिता तथा गुरु की महिमा

किसका ब्राह्मण जन्म व्यर्थ है

ब्राह्मण के कर्त्तव्य
नारी का आकर्षण
गुण सबसे लें
दहेज प्रथा
नारी महिमा
नारीरक्षा
स्त्रीपुरुष समानता
गृहस्थ के जंजाल
गृहस्थी में पाँच यज्ञ
किसका मानव जीवन व्यर्थ है
गृहस्थी का महत्व
असहाय की सहायता
त्याज्य व्यक्ति
सन्तोष का फल
संगत का प्रभाव
ब्रह्ममुहुर्त्त में निद्रात्याग का लाभ

त्यागयोग्य

सदा सच बोलो

निन्दनीय बात

सुख–दुःख

इनको न मारो

इनका त्याग करो

सर्वश्रेष्ठ दान

शुद्धता

काल की गति

आत्मरक्षा

उन्नति का मार्ग

चारों वर्णों के जीविका के साधन

पापों से मुक्त

आत्मा–परमात्मा

आमुख

मनुस्मृति भारतीय संस्कृति की अनमोल धरोहर है। शताब्दियों पूर्व लिखी होने पर भी यह आज के धर्म, समाज तथा शासक वर्ग के लिए पथ–प्रदर्शक का कार्य करती है।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक चारों वर्णों के कर्त्तव्यपालन का बोध करवाने वाले इस ग्रंथ में ब्रह्म, मानव, धर्म, समाज, देश, शासन, स्त्री–पुरुष के लिये आचार नियमों का जो दिग्ददर्शन किया गया है उसका अनुशीलन करने वाला देश, वर्ण तथा धर्म कभी भी हीन नहीं हो सकता। किंतु पश्चिम की चकाचौंध में भ्रमित जनसमूह अपने भूतकाल को भूलकर पतन की ओर अग्रसर है।

हिमालय से हिन्द महासागर तक का भू–भाग हिन्दुस्तान–भारत विश्व की सभ्यता, संस्कृति, कला, विज्ञान तथा भाषा का जनक है। इसी भू–भाग पर जन्म लेने वाले मानव संसार में फैले। समय तथा परिस्थितियों के साथ अन्य सभ्यता, संस्कृति तथा भाषाओं की उत्पत्ति हुई किन्तु आज भी उनका सम्बन्ध कहीं न कहीं, किसी न किसी रुप में अपनी जननी जन्मभूमि के साथ है।

कुछ लोग मनु को जाने बिना मनुवादियों को अपशब्द कहते हैं जबकि वे स्वयं मनु की ही सन्तान हैं। मनु ने सहस्रों वर्ष पहले आज की कलुषित वृत्तियों का विचार करके समाज को गुण–कर्मों के आधार पर चार भागों में बांटा।

जिससे कि सब एक दूसरे के पूरक बनकर अपने कर्त्तव्यों का पालन करें तथा समाज सुव्यवस्थित रहे। किन्तु कुछ स्वार्थी लोगों ने जातिवाद का विष समाज में घोल दिया। जिससे चारों तरफ अराजकता, अधर्म, अन्याय तथा द्वेष फैल रहा है। इससे मानवता पतन की ओर ही जायेगी।

मनुस्मृति एक अथाह ज्ञानसागर है। उसमें से कुछ मोती इस छोटी सी पुस्तिका में पिरोने का प्रयास किया है। आशा है मानवमात्र मनु की शिक्षा तथा उद्देश्य को समझेगा।

इस मनुशतक के लिए प्रेरणा तथा संदर्भ स्वामी तुलसीदास शर्मा द्वारा लिखित भाषानुवाद से प्राप्त हुआ। मैं उनका अत्यन्त आभारी हूं।

– वैद्य नंद लाल शर्मा

ब्रह्म

यत्तत्कारणमव्यक्तं नित्यं सदसदात्मकम्।
तद्विसृष्टः स पुरुषो लोके ब्रह्मेति कीर्त्यते।।

–मनुस्मृति 1/11

सदसदात्मक सृष्टि की रचना करने वाली निराकार तथा नित्य शक्ति को ब्रह्म कहते हैं।

इस संसार में जड़–चेतन प्राणी, सूर्य–चन्द्र–तारे, वर्षा–सूखा, सर्दी–गर्मी आदि अनेक आश्चर्यजनक घटनाओं को देखकर, इनको करने वाली अदृश्य शक्ति को ब्रह्म–भगवान कहते हैं।

संसार का विस्तार

लोकानान्तु विवृद्धयर्थ मुखबाहूरुपादतः।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निवर्तयत्।।

–मनुस्मृति 1/31

संसार की वृद्धि के लिए मुख–ब्राह्मण, बाहु–क्षत्रिय, उरु–वैश्य, पाद–शूद्र नाम से चार पुरुष उत्पन्न किये।

ब्रह्म एक है। उसने संसार में अपने जैसे अनेक रुप देखने की इच्छा से अपने अंगों से चार पुरुषों को उत्पन्न किया जिससे इस सम्पूर्ण जगत् में प्राणियों

की उत्पत्ति तथा प्रसार हुआ।

दिन—रात

अहोरात्रे विभजते सूर्यो मानुषदैविके।
रात्रि स्वप्नाय भूतानां चेष्टाय कर्मणमहः।।

—मनुस्मृति 1/65

मानवों तथा देवों के लिए सूर्य समय को दो भागों में बांटता है। इनमें रात्रि प्राणियों के आराम तथा दिन कर्म के लिए है।

कालगति अबाध है परन्तु कर्त्ता को विश्राम चाहिये जिससे कि वह कार्य को गति दे सके। अतः दिन प्राणियों के कर्म के लिए तथा रात्रि आराम करने के लिए बनाकर समय को दो भागों में बांट दिया।

वर्णाश्रम

सर्वस्यास्य तु सर्गस्य गुप्त्यर्थ स महाद्यूतिः।
मुखबाहूरुपज्जानां पृथक्कर्माणयकल्पयत्।।

— मनुस्मृति 1/87

इस संसार की भलाई के लिए ब्रह्म ने मुख, बाहु, उरु तथा पाद के पृथक—पृथक कर्म निश्चित किये।

संसार रुपी शरीर को सुचारु रुप से संचालित करने के लिए शरीर से उत्त्पन्न चारों अंगों के कर्म निश्चित कर दिये जिससे कि उनमें परस्पर समन्वय बना रहे तथा वे एक दूसरे से सहयोग करते रहें।

आचार महिमा

आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च।
तस्मादस्मिन्सदायुक्तो नित्यं स्यादात्मवान् द्विजः।।

— मनुस्मृति 1/108

वेद तथा धर्म ग्रन्थों में बताया गया आचार सबसे बड़ा धर्म है। आत्मकल्याण चाहने वाला बुद्धिमान पुरुष सदा आचार का पालन करे।

उपयोगी लाभदायक रहन सहन, आहार, निद्रा, सत्य, संतोष के साथ सादा जीवन व्यतीत करने वाला सदा सुखी रहता है।

आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्सिताः प्रजाः।
आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्ष्णम्।।

—मनुस्मृति 4/156

आचार पालन से आयु, धन तथा संतान प्राप्त होते हैं तथा सब बाधायें नष्ट होती हैं।

नियमित संयत जीवनयापन से पुरुष दीर्घायु होता है, धन—संपत्ति उत्पन्न करता है तथा योग्य संतान प्राप्त करता है।

आचारद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते।
आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग्भवेत्।।

—मनुस्मृति 1/109

आचार का पालन न करने वाला ब्राह्मण वेदों के अनुसार बताये गये फल को प्राप्त नहीं करता। आचार से संयुक्त होने पर ही वह सब फलों का अधिकारी होता है।

कोई भी कर्म यदि विधिपूर्वक किया जाये तो उसमें सफलता प्राप्त होती है। बिना उचित नियमों के काम करने से उसमें सफलता नहीं मिलती।

कर्म का कारण

अकामस्य क्रियाकाचिद्दृश्यतेनेह कर्हिचित्।
यद्यद्धि कुरुते किञ्चित्तत्तत्कामस्य चेष्टितम्।।

— मनुस्मृति 2/4

संसार में कोई भी क्रिया बिना इच्छा के नहीं होती। पुरुष जो भी कार्य करता है किसी न किसी इच्छा से ही करता है।

इस संसार में प्राणी इच्छा प्रधान है। बिना इच्छा के कोई काम नहीं होता। उनके दैनिक कार्य भी इच्छा से प्रेरित होते हैं।

दृढ़निश्चय द्वारा ही इच्छापूर्ति संभव है

संकल्पमूलः कामोवै यज्ञः संकल्पसंभवाः।
व्रतानि यमधर्माश्चि सर्वे संकल्पजाः स्मृताः।।

–मनुस्मृति 2/3

लाभ–हानि के विचार से दृढ़ निश्चय द्वारा इच्छापूर्ति के प्रयत्न से ही सब कार्य पूरे होते हैं। यज्ञ, व्रत, नियम तथा कर्त्तव्य सब दृढ़ निश्चय से सफल होते हैं।

मन में किसी भी इच्छा के उत्पन्न होने पर उसके लाभ–हानि के बारे में विचार करके दृढ़ निश्चय से प्रयत्न करने पर ही इच्छा पूर्ण होती है। दृढ़ निश्चय के बिना सफलता नहीं मिलती।

धर्म के लक्षण

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयंशौचमिंद्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।

–मनुस्मृति 6/92

धैर्य, क्षमा, दम– मन वश में करना, चोरी न करना, इन्द्रियों को वश में करना,

शौच, धर्मज्ञान, सत्य तथा क्रोध न करना — ये धर्म के दस लक्षण हैं। जो व्यक्ति इन दस नियमों का पालन करता है वही धार्मिक है।

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।

— मनुस्मृति 2/12

वेदों में वर्णित, स्मृति ग्रन्थों द्वारा प्रचारित, पूर्वजों द्वारा अपनाई विधि जिससे कर्त्ता को कर्म करने से आत्मसंतोष हो वही धर्म है।

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च।।

— मनुस्मृति 2/6

वेदों में बताये गये नियम, स्मृति ग्रन्थों में बताया व्यवहार, साधुओं का आचार तथा मन की प्रसन्नता ही धर्म है।

करने योग्य कर्मों का ज्ञान, वेद—शास्त्रों के पढ़ने से, महापुरुषों के आचरण से जो पता लगे तथा जिस कार्य के करने से मन भी प्रसन्न हो, वही धर्म है। अनुचित कार्य से कर्त्ता सदा दुखी रहता है।

येनास्य पितरो याता येन याताः पितामहाः।
तेन यायात्सतां मार्गं तेन गच्छन्न रिष्यते।।

—मनुस्मृति 4/178

जिस विधि से माता—पिता तथा दादा—परदादा ने जीवनयापन किया हो उसी विधि से जीने में कोई दोष नहीं है। वह भी धर्म है।

पूर्वज जिन नियमों का पालन करते थे, जिन देवी—देवताओं तथा धर्म को मानते थे, वह धर्म भी जानना चाहिए। उसे परम्परागत धर्म भी कहते हैं।

चारों वर्णों का धर्म

अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचिमिन्द्रियनिग्रहः।
एतं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येब्रवीन्मनुः।।

—मनुस्मृति 10/63

समाज के चारों वर्णों के लिए अहिंसा तथा सत्य का पालन, चोरी—ठगी न करना, पवित्र रहना तथा इन्द्रियों को वश में रखना आवश्यक धर्म हैं।

धर्मपालन से स्वर्ग सुख

श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः।
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्।। —मनुस्मृति 2/9

वेद–स्मृति ग्रन्थों में बताये अनुसार अपने कर्त्तव्यपालन करने वाला पुरुष जीवन में सम्मान तथा स्वर्ग में सुख प्राप्त करता है।

जो पुरुष अपने जीवन में धार्मिक, सामाजिक तथा शासकीय नियमों का पालन करता है वह सब जगह अच्छा समझा जाता है।

धर्मपालन से आत्मरक्षा

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नोधर्मोहतोऽवधीत्।।

–मनुस्मृति 8/15

धर्मरक्षा से स्वयं की रक्षा होती है तथा धर्मनाश से स्वयं का नाश भी होता है। अतः आत्मरक्षा के लिए धर्म की रक्षा करें।

जो पुरुष, समाज तथा देश अपने संविधान का पालन करने में तत्पर रहता है उसे सदा सम्मान प्राप्त होता है। जहां अराजकता होती है वहां नाश ही होता है।

धर्म ही सहायक

नामुत्र ही सहायार्थ पिता माता च तिष्ठतः।
न पुत्रदारं न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवलः।। –मनुस्मृति 4/239

मृत्यु के पश्चात् परलोक में माता–पिता, पुत्र, पत्नी कोई सहायता नहीं करता, केवल धर्म ही सहायता करता है।

प्राण निकलने के पश्चात् सभी सम्बन्धी साथ छोड़ देते हैं। केवन जीवन में किए गए पुण्य–पाप ही सुख–दुःख देते हैं।

मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्टसमं क्षितौ।
विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति।।

–मनुस्मृति 4/241

मरने पर सम्बन्धी मृतदेह को लकड़ी या मिट्टी के ढ़ेर की तरह शमशान में रखकर चले जाते हैं। कोई साथ नहीं जाता, केवल धर्म ही जाता है।

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति।।

–मनुस्मृति 8/17

एक धर्म ही मित्र है जो मृत्यु के बाद साथ चलता है, शेष सब शरीर के साथ ही नष्ट हो जाता है।

माता–पिता, सन्तान, पत्नी, धन–संपदा सब मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाते हैं। मृतक के केवल अच्छे कर्म ही याद किये जाते हैं।

नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव।
शनैरावर्तमानस्तु कर्तुर्मूलानि कृन्तात।।

– मनुस्मृति 4/172

इस संसार में अधर्म का पापफल तुरन्त नहीं मिलता प्रत्युत् गाय तथा पृथ्वी की तरह समय पाकर पाप अधर्मी का नाश कर देता है।

गाय की बछड़ी समय पाकर ही दूध देती है। पृथ्वी में बीज डालने पर वह समय पर ही फल देता है। उसी प्रकार पाप भी समय पाकर अपना दुःख रुपी फल अवश्य देता है।

भोजन महत्ता

पूजयेदशनं नित्यमद्याच्चैतदकुत्सयन्।
दृष्टवा हृष्येत्प्रसीदेच्च प्रतिनंदेच्च सर्वशः।।

–मनुस्मृति 2/54

भोजन सत्कारपूर्वक, प्रसन्नतापूर्वक, प्रशंसापूर्वक बिना निन्दा के करना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति की अपनी–अपनी रुचि होती है। कभी–कभार मनपसन्द भोजन नहीं भी मिलता फिर भी प्रसन्नता तथा प्रशंसापूर्वक भगवान का धन्यवाद कर भोजन करना चाहिए।

पूजितं ह्यशनं नित्यं बलभूजं च यच्छति।
अपूजितं तु तद्भुक्तमुभयं नाशयेदिदम्।।

–मनुस्मृति 2/55

सम्मानपूर्वक भोजन करने से बल तथा वीर्य बढ़ते है। बिना सम्मान के दोनों का नाश होता है।

बिना रुचि के किया गया भोजन अच्छी प्रकार नहीं पचता जिससे अजीर्णादि रोग उत्त्पन्न होकर स्वास्थय नष्ट करते हैं।

अतिभोजन से हानि

अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजनम्।
अपुण्यं लोकविद्विष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत्।।

–मनुस्मृति 2/57

अधिक भोजन करने से स्वास्थय नष्ट होता है, अशांति उत्त्पन्न होती है, पाप लगता है, लोग निन्दा करते हैं, अतः अधिक भोजन नहीं करना चाहिए।

भोजन शरीर के लिए आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता पृथक–पृथक होती है फिर भी आवश्यकता से अधिक खाने से हानि होती है।

पापी को सफलता नहीं

वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसिच।
न विप्रदुष्टभावस्य सिद्धि गच्छन्ति कर्हिचित्।।

—मनुस्मृति 2/97

दुर्भावना से विद्याध्ययन, बलिदान, यज्ञ, कर्त्तव्यपालन तथा तप में सफलता नहीं मिलती।

शुभकर्म करने के लिए भावना भी शुभ होनी चाहिए। जो पुरुष पापी मन से धर्म—कर्म करता है उसे सफलता तथा धर्म का फल प्राप्त नहीं होता।

जितेन्द्रिय

श्रुत्वा स्पष्ट्रवाच दृष्ट्रवाच भुक्तवा घ्रात्वाच योनरः।
न हृष्यति ग्लायति वा सविज्ञेयो जितेन्द्रियः।।

—मनुस्मृति 2/98

जिसे निन्दा—स्तुति, कोमल—कठोर, सुन्दर—असुन्दर, स्वाद—अस्वाद, सुगन्ध—दुर्गन्ध से हर्ष—शोक अनुभव न हो वही जितेन्द्रिय है।

जितेन्द्रिय पुरुष बिना सुख—दुःख अनुभव करे हर स्थिति में समान व्यवहार करता है।

जितेन्द्रिय का महत्व

सावित्रीमात्रसारोपि वरं विप्रः सुयन्त्रितः।
नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्वाशी सर्वविक्रयी।।

–मनुस्मृति 2/118

चरित्रवान ब्राह्मण कम पढ़ा–लिखा होने पर केवल गायत्रीमंत्र जानने पर भी श्रेष्ठ है। लेकिन तीन वेदों का ज्ञाता ब्राह्मण अगर चरित्रहीन तथा सब कुछ (मास–मदिरा आदि) खाने वाला हो तो वह श्रेष्ठ नहीं माना जाता।

चरित्रवान, जितेन्द्रिय ब्राह्मण को कम शिक्षित होने पर भी अधिक शिक्षित लेकिन चरित्रहीन ब्राह्मण से ज्यादा महत्व देना चाहिए।

सुखं ह्यवमतः शेते सुखं च प्रतिबुद्धयते।
सुखं चरति लोकेऽस्मिन्नवमन्ता विनश्यति।।

–मनुस्मृति 2/163

जितेन्द्रिय पुरुष अपमानित होने पर भी शांति से सोता–जागता है, शांत जीवन व्यतीत करता है और उसे अपमानित करने वाला नष्ट हो जाता है।

व्यर्थ न बोलें

नापृष्टः कस्यचिद् ब्रू यान्न चाऽन्यायेन पृच्छत।
जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोकं आचरेत्।।

–मनुस्मृति 2/110

बुद्धिमान पुरुष को बिना पूछे तथा अवज्ञापूर्वक पूछे जाने पर कुछ नहीं बोलना चाहिए अपितु अनजान बन जाना चाहिए।

धर्मार्थौ यत्र न स्यातां शुश्रूषा वाऽपि तद्विधा।
तत्र विद्या न वक्तव्या शुभं बीजमिवोषरे।।

–मनुस्मृति 2/112

जहां न धर्म की बात हो, न धन प्राप्ति की तथा न ही सम्मान प्राप्त होता हो वहां लाभकारी बात न बतायें, क्योंकि बंजर भूमि में बोया बीज जैसे व्यर्थ होता है वैसे ही इस तरह की बात का कोई प्रभाव नहीं होता।

अधर्मेण च यः प्राह यश्चाधर्मेण पृच्छति।
तयोरन्यतरः प्रैति विद्वेष वाधिगच्छति।।

–मनुस्मृति 2/111

अधर्मपूर्वक (झूठ) बोलने तथा पूछने से परस्पर शत्रुता उत्पन्न होती है।

बुद्धिमान व्यक्ति को बिना पूछे, अवज्ञापूर्वक पूछे जाने पर, बिना किसी लाभ के कभी अपने विचार प्रकट नहीं करने चाहिए। ऐसी परिस्थितियों में झूठ न बोलकर अनजान बन जाना चाहिए।

वृद्धसेवा का लाभ

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।।

—मनुस्मृति 2/121

अपने से अधिक आयु, बल तथा ज्ञान वाले का अभिवादन तथा सेवा करने से आयु, विद्या, यश तथा बल की प्राप्ति होती है।
अपने से अधिक आयु, ज्ञान तथा बल वाले का अभिवादन तथा सेवा करने से कर्त्ता को आशीर्वाद तथा ज्ञान की शिक्षा मिलती है जिससे उसका यश बढ़ता है।

वृद्धांश्च नित्यं सेवेत विप्रान्वेदविदः शुचीन्।
वृद्ध सेवी हि सततं रक्षोभिरपि पूज्यते।।

—मनुस्मृति 7/38

धर्मशास्त्र के जानने वाले विद्वानों की सेवा करने से शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

किसी महान व्यक्ति के साथ सहयोग होने से निर्बल को कोई कुछ नहीं कहता जिससे कि शत्रु भी मित्र बन जाते हैं।

यो न वेत्त्यभिवादस्य विप्रः प्रत्यविभादनम्।
नाभिवाद्यः स विदुषा यथा शूद्रस्तथैव सः।।

–मनुस्मृति 2/126

बड़ों को सम्मान देना, प्रणाम करना बहुत लाभदायक है किन्तु जो अभिवादन का उत्तर न दे, कुशलक्षेम न पूछे उसी हीन समझकर भविष्य में प्रणाम न करें।

पिता

अज्ञो भवति वैबालः पिता भवति मन्त्रदः।
अज्ञं हि बालमित्याहुः पितेत्येव तु मन्त्रदमः।।

–मनुस्मृति 2/153

अज्ञानी व्यक्ति बालक होता है तथा शिक्षक पिता होता है।

व्यक्ति की आयु कुछ भी हो जब तक उसकी बुद्धि कार्य नहीं करती, वह किसी विषय का ज्ञाता नहीं बनता, तब तक वह बालक ही कहा जायेगा। उसको विषय विशेष में बताने वाला पिता माना जायेगा।

ब्राह्मणं दशवर्षं तु शतवर्षं तु भूमिपम्।
पितापुत्रौ विजानीयात् ब्राह्मणस्तुतयोः पिता।।

–मनुस्मृति 2/136

दस वर्ष का ब्राह्मण तथा सौ वर्ष का क्षत्रिय एक साथ हों तो ब्राह्मण को क्षत्रिय का पिता समझना चाहिए भाव विद्वान ब्राह्मण ही उत्तम है।

ब्राह्मस्य जन्मनः कर्ता स्वधर्मस्य च शासिता।
बालोपि विप्रो वृद्धस्य पिता भवति धर्मतः।।

–मनुस्मृति 2/150

ज्ञान द्वारा नवजीवन देने वाला, ज्ञानी धार्मिक विद्वान ब्राह्मण आयु कम होने पर भी प्रशिक्षु का धर्मपिता होता है।

जो ब्राह्मण अज्ञानी को ज्ञान देकर उसे नया जीवन देता है, उसे अपने कर्त्तव्यपालन की शिक्षा देता है वह कम आयु होने पर भी अज्ञानी का पिता माना जायेगा।

मन्त्रतस्तु समृद्धानि कुलान्यल्पधनान्यपि।
कुलसंख्यां च गच्छन्ति कर्षन्ति च महद्यशः।।

–मनुस्मृति 3/66

न्यून धनी होने पर भी शिक्षित परिवार की गणना उच्च प्रतिष्ठित परिवारों में होती है।

महानता

वित्तं बन्धुर्वय कर्म विद्या भवति पंचमी।
एतानि मान्यस्थानानि गरियो यद्यदुत्तरम्।।

–मनुस्मृति 2/136

धन, संपदा, परिवार, आयु, पदवी तथा ज्ञान यह पांच एक दूसरे से श्रेष्ठ हैं। इनमें शिक्षा–ज्ञान श्रेष्ठ माना गया है। कारण कि धन, उच्च परिवार, दीर्घायु, उच्च पदवी होने पर भी यदि पुरुष को शिष्टाचार नहीं आता, उसका चरित्र ठीक नहीं, सत्य एवं सेवा धर्म का वह पालन नहीं करता, उचित–अनुचित का ज्ञान नहीं तो बाकी सब कुछ व्यर्थ है। ये गुण शिक्षाज्ञान से ही उत्पन्न होते हैं।

न हायनैर्न पलितैर्न वित्तेन न बन्धुभिः।
ऋषयश्चक्रिरे धर्मं यानूचानः स नो महान्।।

–मनुस्मृति 2/154

आयु अधिक होने, श्वेतकेश होने, धन–संपदा अधिक होने, परिवार के बड़ा होने

से भी कोई महान नहीं होता। महान वही है जो धर्म का पालन करता है।

धर्म समाज तथा देश में प्रचलित एवं मान्य नियमों—कर्त्तव्यों का पालन करने वाला समाज में सम्मानित माना जाता है।

न तेन वृद्धो भवति येनास्य पलितं शिरः।
यो वै युवाप्यधीयानस्तं देवाः स्थविरं विदुः।।

—मनुस्मृति 2/156

सिर के बाल सफेद होने से कोई वृद्ध नहीं होता, शिक्षित युवा को भी सज्जन पुरुष ज्ञानवृद्ध मानते हैं।

अशिक्षित मूर्ख पुरुष के बजाय शिक्षित कम आयु को वृद्ध ज्ञानी समझना चाहिए।

विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठवं क्षत्रियाणां तु वीर्यतः।
वैश्यानां धान्यधनतः शूद्राणामेव जन्मतः।।

—मनुस्मृति 2/155

ब्राह्मण यदि शिक्षित है, क्षत्रिय यदि शक्तिशाली है, वैश्य यदि धन—संपदा वाला है तभी बड़े माने जाते हैं, लेकिन शूद्र जन्म से ही बड़ा होता है।

मनुजी ने शूद्र को जन्मतः श्रेष्ठ मानकर सेवाभावना को सब धर्मों से उत्तम माना है।

इन चार का सम्मान करें

आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः पितामूर्त्तिः प्रजापतेः।
माता पृथिव्यामूर्तिस्तु भ्रातास्वोमूर्तिरात्मनः।।

—मनुस्मृति 2/225

ज्ञान देने वाला आचार्य, रचना करने वाला पिता, गर्भधारण करने वाली माता, अपने समान भ्राता को क्रमशः वेद, ब्रह्मा, पृथ्वी तथा आत्मा की मूर्ति समझना चाहिए।

इनका अपमान न करें

आचार्यश्च पिता चैव माता भ्राता च पूर्वजः।
नार्त्तेनाप्यवमन्तव्या ब्राह्मणेन विशेषतः।।

—मनुस्मृति 2/226

गुरु, पिता, माता, भाई तथा पितरों का कभी अपमान न करें।

सर्वश्रेष्ठ तप

तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सर्वदा।
तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तपः सर्वं समाप्यते।।

–मनुस्मृति 2/228

माता, पिता तथा गुरु की सेवा करें। इनकी सेवा ही सबसे बड़ा तप है।

त्रिष्वेतेष्वितिकृत्यं हि पुरुषस्य समाप्यते।
एषधर्मः परः साक्षादुपधर्मोऽन्य उच्यते।।

–मनुस्मृति 2/237

माता, पिता तथा गुरु की सेवा से मनुष्य के सब धर्म पूरे हो जाते हैं। इनकी सेवा ही परमधर्म है बाकी सब उपधर्म हैं।

माता, पिता तथा गुरु की महिमा

उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्र तु पितन्माता गौरवेणचारोच्यते।।

–मनुस्मृति 2/145

अध्यापक से दस गुणा आचार्य, आचार्य से सौ गुणा पिता तथा पिता से हजार गुणा माता महान होती है।

अध्यापक शिक्षा देता है, गुरु जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है, पिता जन्म तथा पालन–पौषण करता है, माता अपने रक्त से बालक का निर्माण करती है तथा अनेक कष्ट सहकर उसका पालन–पौषण करती है, अतः माता को सबसे अधिक वन्दनीय माना गया है।

सर्वे तस्या धर्मायस्येते त्रय आदृताः।
अनादृतास्तु यस्येते सर्वास्तस्यऽफलाः क्रियाः।।

–मनुस्मृति 2/234

माता, पिता तथा गुरु की सेवा से सब धर्मकार्य सफल होते हैं। जो इनकी सेवा नहीं करता उसके व्रत, दान, धर्म सब व्यर्थ हैं।

किसका ब्राह्मण जन्म व्यर्थ है

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः।
यश्च विप्रोनधीयानस्त्रयस्ते नाम बिभ्रति।।

–मनुस्मृति 2/157

काठ के हाथी, भूसा भरे मृग की तरह अनपढ़ ब्राह्मण नाममात्र का ब्राह्मण होता है। वास्तविक नहीं।

जैसे काठ का बना खिलौना हाथी तथा भूसा भरा मृग केवल नाममात्र के

हाथी तथा मृग होते हैं वैसे ही जो ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर अनपढ़ हो वह भी नाममात्र का ही ब्राह्मण होता है वास्तविक नहीं। उसका जन्म लेना व्यर्थ है।

यथा षण्डोऽफलः स्त्रीषु यथा गौर्गंविचाफला।
यथा चाडज्ञेऽफलं दानं तथाविप्रोनृचोऽफला।।

—मनुस्मृति 2/158

जैसे स्त्रियों में नंपुसक निष्फल, गायों में गाय, मूर्ख को दिया दान व्यर्थ है, वैसे ही अनपढ़ ब्राह्मण व्यर्थ है।

युवा सुन्दर स्त्रियों में नंपुसक पुरुष कार्य नहीं कर सकता। गायों में गाय बछड़ा उत्पन्न नहीं कर सकती, मूर्ख सहायता का लाभ नहीं उठा सकता उसी प्रकार ब्राह्मण कुल में उत्पन्न अनपढ़ भी ब्राह्मणकर्म नहीं कर सकता।

ब्राह्मण के कर्त्तव्य

वेदमेव सदाभ्यस्येत्तपस्तप्स्यन् द्विजोत्तमः।
वेदाभ्यासो हि विप्रस्य तपः परमिहोच्यते।।

—मनुस्मृति 2/166

तप करने के लिए ब्राह्मण को सदा धर्मशास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए क्योंकि वेदाध्ययन ही ब्राह्मण के लिए तप कहा गया है।

योऽनधीत्य द्विजोवेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः।।

—मनुस्मृति 2/168

जो ब्राह्मण वेदाध्ययन त्यागकर अन्य कर्म करता है वह परिवार सहित ब्राह्मणत्व से च्युत होकर शूद्र बन जाता है।

द्यूतं च जनवादं च परिवादं तथानृतम्।
स्त्रीणां च प्रेक्षणलम्भमुपधातं परस्य च।।

—मनुस्मृति 2/176

जुआ, झगड़ा, चुगली, झूठ, निंदा तथा पराई स्त्री के साथ वार्तालाभ करने वाला ब्राह्मण निन्दनीय है।

नारी का आकर्षण

स्वभाव एष नारीणां नराणमिह दूषणम्।
अतोर्थान्न प्रमाद्यन्ति प्रमदासु विपश्चितः।।

—मनुस्मृति 2/213

स्त्रियां स्वभावतः पुरुष को दोष देती हैं अतः विद्वान पुरुष स्त्रियों से सावधान रहते हैं।

अविद्वांसंमलं लोके विद्वांसमपि वा पुनः।
प्रमदा ह्यूत्पथं नेतुं कामक्रोधवशानुगम्।।

–मनुस्मृति 2/214

काम–क्रोध की स्थिति में स्त्री मूर्ख तथा विद्वान को भी पथभ्रष्ट कर सकती है।

मानव मन चंचल है। जो काम–क्रोध के अधीन होकर विविध उत्पात करता है तथा मानव को पथभ्रष्ट करता है। अतः व्यक्ति को पत्नी के अतिरिक्त किसी दूसरी स्त्री के साथ एकांतवास नहीं करना चाहिए। स्त्री की लालसा में वह कभी भी पाप कर सकता है।

गुण सबसे लें

श्रद्धधान शुभां विद्यामाददीतावरादपि।
अन्त्यादपि परं धर्मं स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि।।

–मनुस्मृति 2/238

अच्छा ज्ञान शूद्र से, धर्म शिक्षा चांडाल से, सुन्दर स्त्री नीच कुल से भी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

गुण किसी की बपौती नहीं हैं। एक शूद्र विद्वान, चांडाल धर्मज्ञ तथा सुन्दर स्त्री नीच कुल में भी उत्पन्न हो सकते हैं। अच्छी तथा सुंदर वस्तु कहीं से भी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

विषादप्यमृतं ग्राह्यं बालादपि सुभाषितम्।
अमित्रादपि सद्वृत्तममेध्यादपि का०चनम्।।

–मनुस्मृति 2/239

विष से अमृत, बालक से शुभ वचन, शत्रु से सदाचार तथा मलमूत्र से स्वर्ण ग्रहण कर लेना चाहिए।

स्त्रियोरत्नान्यथो विद्या धर्मः शौचं सुभाषितम्।
विविधानि च शिल्पानि समादेयानि सर्वतः।।

–मनुस्मृति 2/240

सुन्दर स्त्री, रत्न, ज्ञान, धर्म शिक्षा, शुद्धता, हितकारी विचार तथा अनेक प्रकार की शिल्पकला सबसे प्राप्त कर लेनी चाहिए।

दहेज प्रथा

न कन्यायाः पिता विद्वान्गृहन्ीयाच्छुल्कमणवपि।
गृहन् श्छुल्कं हि लोभेन स्यान्नरोपत्यविक्रयी।।

–मनुस्मृति 3/51

कन्या के पिता को वरपक्ष से एक पैसा भी नहीं लेना चाहिए। यदि ले तो वह सन्तान बेचने वाला माना जाता है।

स्त्रीधनानि तु ये मोहादुपजीवन्ति बान्धवाः।
नारी यानानि वस्त्रं वा ते पापा यान्त्यधोगतिम्।।

—मनुस्मृति 3/52

कन्या के विवाह में सम्बन्धियों द्वारा दिए वस्त्राभूषण, वाहन तथा अन्य सामान, स्त्रीधन को लोभवश जो वरपक्ष वाले ले लेते हैं उनका नाश हो जाता है।

दहेज लेना तथा देना दोनों ही हानिकारक हैं।

आददीत न शूद्रोऽपि शुल्कं दुहितरं ददन्।
शुल्कं हि गृहन्कुरुते छन्नं दुहितृ विक्रयम्।।

—मनुस्मृति 9/98

अत्यन्त निर्धन होने पर भी वरपक्ष से दहेज नहीं लेना चाहिए। जो ऐसा करता है वह कन्या बेचने के पाप का भागी होता है।

नारी महिमा

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः।।

—मनुस्मृति 3/56

जिस परिवार में स्त्रियों का सम्मान होता है वहां सुख–सौभाग्य रहते हैं। जहां इनका सम्मान नहीं होता वहां सब धर्म–कर्म व्यर्थ होते हैं, सुखशांति नहीं मिलती।

सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्रवै ध्रुवम्।।

–मनुस्मृति 3/60

जिस घर में पत्नी से पति, पति से पत्नी सन्तुष्ट हों वहां सदा शुभ होता है।

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा।।

–मनुस्मृति 3/57

जिस परिवार में स्त्रियां दुःखी हों, वह परिवार नष्ट हो जाता है। जहां स्त्रियां प्रसन्न हों वह परिवार सदैव उन्नति करता है।

जामायो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः।
तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्ततः।।

–मनुस्मृति 3/58

जिस परिवार को अपमानित स्त्रियां दुवर्चन, श्राप दे देती हैं वह परिवार नष्ट हो जाता है।

तस्मादेताः सदा पूज्या भूषणच्छादनाशनैः।
भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषु च।।

–मनुस्मृति 3/59

परिवार की सुख–शांति के लिए उत्सव, त्यौहार आदि कार्यों में स्त्रियों को सुन्दर वस्त्राभूषण व पकवानों से प्रसन्न करना चाहिए।

यदि हि स्त्री न रोचेत पुमांसं न प्रमोदयेत्।
अप्रमोदात्पुनः पुंसः प्रजनं न प्रवर्त्तते।।

–मनुस्मृति 3/61

स्त्री यदि प्रसन्न होकर पति को प्रसन्न न करे तो कुलवृद्धि के लिए सन्तान नहीं होती।

स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम्।
तस्यां त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते।।

–मनुस्मृति 3/62

वस्त्राभूषण से स्त्री की सुन्दरता तथा स्त्री की सुन्दरता से परिवार की शोभा

बढ़ती है।

नारीरक्षा

बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्पाणिग्राहस्य यौवने।
पुत्राणां भर्तरि प्रेते न भजेत्स्त्रीस्वतन्त्रताम्।।

–मनुस्मृति 5/148

स्त्री बाल्यावस्था में पिता, युवावस्था में पति तथा पति की मृत्यु के बाद पुत्रों के साथ रहे। वह कभी भी एकाकी न रहे।

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।
रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।।

–मनुस्मृति 9/3

कौमार्यावस्था में पिता, यौवनावस्था में पति तथा वृद्धावस्था में स्त्री की रक्षा पुत्र करते हैं, उसे कभी निराश्रय नहीं रहना चाहिए।

स्त्री दो कुलों का मान होती है। अतः हर अवस्था में उसकी रक्षा करना ोनों कुलों का कर्त्तव्य है।

स्त्रीपुरुष समानता

क्षेत्रभूता स्मृता नारी बीजभूतः स्मृतः पुमान्।
क्षेत्रबीजसमायोगात्संभवः सर्वदेहिनाम्।।

–मनुस्मृति 9/33

नारी खेत तथा पुरुष बीज के समान है। खेत तथा बीज के संयोग से सम्पूर्ण प्राणी उत्पन्न होते हैं।

गेहुँ, चना आदि कृषि कार्य के लिए भूमि तथा बीज दोनों की आवश्यकता होती है। एक के अभाव में यह कार्य नहीं हो सकता। इसी तरह स्त्री तथा पुरुष के बिना सन्तान उत्पन्न नहीं हो सकती। दोनों का समान महत्व है।

प्रजनार्थं स्त्रियः सृष्टाः संतानार्थं च मानवाः।
तस्मात्साधारणो धर्म श्रुतौपत्न्यासहोदितः।।

–मनुस्मृति 9/96

सन्तान रुपी बीज के लिए पुरुष तथा प्रजनन क्रिया रुपी भूमि के लिए स्त्री को उत्पन्न किया। अतः दोनों का समान महत्व है।

गृहस्थ के जंजाल

पंच सूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषणयुपस्करः।
कण्डनी चोदकुम्भश्च बध्यते यास्तु वाहयन्।।

—मनुस्मृति 3/68

चूल्हा, चक्की, झाड़ू, उखल तथा जल का घड़ा गृहस्थी के लिए पाप का मूल हैं।

गृहस्थी को परिवार का भरण—पोषण करने के लिए उपरोक्त पांच वस्तुओं का उपयोग करना पड़ता है। इनके प्रयोग के समय विविध कीट—पतंगादि जीवों की हत्या अनजाने में हो जाती है।

तासां क्रमेण सर्वासां निष्कृत्यर्थं महषर्भिः।
पंचक्लल्प्ता महायज्ञाः प्रत्यहं गृहमेधिनाम्।।

—मनुस्मृति 3/69

पंचशूनों (पांच पापों) से बचने के लिए महर्षियों ने गृहस्थी को प्रतिदिन पंचयज्ञ करने का निर्देश दिया है।

अनजाने में जीवहत्या के पाप से बचने के लिए गृहस्थी को प्रतिदिन पांच यज्ञ करने चाहिए।

गृहस्थी में पाँच यज्ञ

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृ यज्ञस्तु तर्पणम्।
होमोदैवोबलिर्भौतोनृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।

–मनुस्मृति 3/70

ब्रह्मयज्ञ–विद्यादान, पितृयज्ञ–तर्पण, देवयज्ञ–हवन, भूतयज्ञ–पशु पक्षियों को दाना पानी तथा मनुष्ययज्ञ– अतिथियों की सेवा सत्कार। इन पाँच यज्ञों से गृहस्थ में हुये पापों का निवारण होता है।

पंचैतान्योमहायज्ञान्न हापयति शक्तितः।
स गृहेऽपि वसन्नित्यं सूनादोषैर्न लिप्यते।।

–मनुस्मृति 3/71

जो गृहस्थ यथाशक्ति इन पाँच यज्ञों को करता है उसे पँचसून दोष नहीं लगता।

किसका मानव जीवन व्यर्थ है

देवतातिथिभृत्यानां पितृणामत्मनश्च यः।
न निर्वपति पंचनामुच्छवसन्न स जीवति।।

–मनुस्मृति 3/72

जो गृहस्थ व्यक्ति देवता, अतिथि, माता–पिता तथा अपने लिए परिश्रम करके

भोजन उपलब्ध नहीं करवा सकता उसका मानव जीवन व्यर्थ है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने माता–पिता, भगवान तथा अतिथि के भोजन हेतु परिश्रम करना चाहिए। जो आलस्यवश ऐसा नहीं करता, पराधीन रहता है वह जीवित भी मृत के समान है।

गृहस्थी का महत्व

यथावायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्वजन्तवः।
तथागृहस्थमाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व आश्रमाः।।

–मनुस्मृति 3/77

जैसे सम्पूर्ण प्राणी वायु के आश्रय से जीवित रहते हैं वैसे ही सब आश्रम गृहस्थी के सहारे ही जीवित रहते हैं।

बिना वायु के प्राणी क्षणमात्र भी जीवित नहीं रह सकता। वायु ही उसके प्राण हैं। इसी तरह गृहस्थी से आश्रय पाकर ब्रह्मचारी, सन्यासी तथा वानप्रस्थी सब अपने–अपने धर्म का पालन करते हैं।

सर्वेषामपि चैतेषां वेदस्मृति विधानतः।
गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः स त्रीनेतान्विभर्ति हि।।

–मनुस्मृति 6/88

वेदशास्त्रों में बताये गये कर्त्तव्यों का पालन करने वाला गृहस्थी सब आश्रमों में श्रेष्ठ बताया गया है क्योंकि वह शेष तीनों का भी पोषण करता है।

असहाय की सहायता

शुनां च पतितान च श्वपचां पापरोगिणं।
वायसानां कृमीणं च शनकैर्निर्वपेद् भुवि।।

–मनुस्मृति 3/92

गृहस्थी कुत्ता–पतित, चांडाल, रोगी, कौआ तथा कृमियों को भी भूमि पर रखकर अन्न जल दे।

प्राय कुत्ता, पापी, चाण्डाल, कुष्टादि के संक्रामक रोगी कौवे तथा कीड़ों को अन्न जल फैंक कर दिया जाता है जो कि उचित नहीं। इन सबको अच्छी जगह पर रखकर नम्रता से अन्न देना चाहिए, तभी अन्न देने का महत्व है।

तृणानि भूमिरुदकं वाक्चतुर्थी च सूनृता।
एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाच।।

–मनुस्मृति 3/101

बैठने के लिए आसन, विश्राम के लिए स्थान, जल तथा मधुर वचनों द्वारा अतिथि का सत्कार करने से कुछ भी खर्च नहीं होता।

त्याज्य व्यक्ति

पाषण्डिनो विकर्मस्थान्वैडालव्रतिका०छठान्।
हैतुकान्बकवृत्तींश्च वाङ्मात्रणापि नार्चयेत्।।

–मनुस्मृति 4/30

पाखण्डी, व्यभिचारी, धोखेबाज, ठग, स्वार्थी तथा प्रपंची को कभी मुंह नहीं लगाना चाहिए।

सन्तोष का फल

संतोषं परमास्थाय सुखार्थी संयतो भवेत्।
संतोषमूलं हि सुखं दुःखमूलं विपर्ययः।।

–मनुस्मृति 4/12

संतोष सुख का, तृष्णा दुःख का कारण है। सुख की इच्छा वाले को संतोषपूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहिए।

विभिन्न इच्छायें रखने वाले व्यक्ति उनकी पूर्ति न होने से अशांत दुःखी रहते हैं किन्तु अपनी इच्छायों का निग्रह करके संयमपूर्वक रहने वाले प्रसन्नता प्राप्त करते हैं।

संगत का प्रभाव

यथायथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति।
तथातथा विजानाति विज्ञानं चास्यरोचते।।

—मनुस्मृति 4/20

जो जिस विषय के साहित्य का अध्ययन करता है उसे वैसे ही विषयों की लगन लग जाती है।

यथा यथा निषेवन्ते विषयान्विषयात्मकाः।
तथा तथा कुशलता तेषां तेषूपजायते।।

—मनुस्मृति 12/73

व्यक्ति जिस प्रकार के वातावरण में रहता है उसी में पारंगत हो जाता है।

ब्रह्ममुहुर्त्त में निद्रात्याग का लाभ

ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान्वेदतत्वार्थमेव च।।

—मनुस्मृति 4/92

ब्रह्ममुहुर्त्त में जागकर भगवान, अपने कर्त्तव्य, लाभ तथा कष्ट का विचार करना चाहिए।

व्यक्ति प्रतिदिन कर्म करता है। फलप्राप्ति के लिए अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। अतः उचित फलप्राप्ति के लिए भगवान का स्मरण करके कर्म में प्रवृत्त होना चाहिए।

त्यागयोग्य

वैरिणं नोपसेवेत सहायं चैव वैरिणः।
अधार्मिकं तस्करं च परस्यैव च योषितम्।।

—मनुस्मृति 4/133

शत्रु, शत्रु के साथी, नास्तिक, ठग तथा पराई स्त्री से सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए।

इन सम्बन्धों के रखने से हानि ही होती है।

सदा सच बोलो

सत्यं ब्रू यात्प्रियं ब्रू यान्न ब्रू यात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रू यादेष धर्मः सनातनः।।

—मनुस्मृति 4/138

सत्य बोलो लेकिन मधुर वाणी में, कटु सत्य न बोलो। मधुर झूठ भी न बोलो। यही सनातन धर्म की परम्परा है।

निन्दनीय बात

हीनांगनतिरिक्तांगन्विद्याहीनान्वयोधिकान्।
रुपद्रव्यविहीनांश्च जातिहीनांश्च नाझपेत्।।

–मनुस्मृति 4/141

अंगहीन, अधिक अंग वाले, मूर्ख, वृद्ध, कुरुप, निर्धन तथा जातिभ्रष्ट को हीनता का ताना न दें।

प्रारब्ध या प्रकृतिवश जो जैसा बन गया उसमें उसका क्या दोष? इसलिए ऐसी स्थिति में कुछ कहने से वैमनस्य ही बढ़ता है।

सुख–दुःख

यद्यत्परवशं कर्म तत्तद्यत्नेन वर्जयेत्।
यद्यदात्मवशंतु स्यात्तत्तसेवेत यत्नतः।।

–मनुस्मृति 4/159

जो काम अपने सामर्थ्य में हो वही करना चाहिए। जो कार्य किसी दूसरे के अधीन हो उसे छोड़ देना चाहिए।

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद्विद्यात्समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः।।

–मनुस्मृति 4/160

अपना हाथ जगन्नाथ, पराधीन को सपने में भी सुख नहीं, यही सुख–दुःख है।

इनको न मारो

आचार्यं च प्रवक्तारं पितरं मातरं गुरुम्।
न हिंस्याद्ब्राह्मणान्गाश्चसर्वांश्चैव तपस्विनः।।

–मनुस्मृति 4/162

आचार्य, धार्मिक वक्ता, माता–पिता, गुरु, ब्राह्मण, गाय तथा सभी स्त्रियों को कभी न मारो।

इनका त्याग करो

नास्तिक्यं वेदनिन्दां च देवतानां च कुत्सनम्।
द्वेषं दम्भं च मानं च क्रोधं तक्ष्णयं च वर्जयेत्।।

–मनुस्मृति 4/163

नास्तिकता, वेदों की बुराई, देवताओं की निंदा, बुराई, द्वेष, दम्भ, अभिमान, क्रोध तथा जल्दबाजी का त्याग करें।

ये सभी मानव को पतन की ओर ले जाते हैं।

सर्वश्रेष्ठ दान

सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते।
वार्यंन्नगोमहीवासस्तिलकांचनसर्पिषाम्।।

—मनुस्मृति 4/233

जल, अन्न, गाय, भूमि, वस्त्र, तिल, स्वर्ण तथा घी के दान से विद्यादान उत्तम है।

किसी अज्ञानी को ज्ञान देना, भूले को रास्ता दिखाना सबसे उत्तम है।

येन येन तु भावेन यद्यद्दानं प्रयच्छति।
तत्तत्तनैव भावेन प्राप्नोति प्रतिपूजितः।।

—मनुस्मृति 4/234

जो दान जिस भावना से कोई करता है उसे उसी के अनुसार सम्मानपूर्वक फल की प्राप्ति होती है।

किसी वस्तु का दान देते समय दाता के मन में जैसी इच्छा होती है वह प्रासंगिक होने पर प्रायः पूरी हो जाती है।

भूमिदो भूमिमाप्नोति दीर्घमायुर्हिंरणयदः।
गृहदोऽग्रयाणि वेश्मानि रुप्यदोरुपमुत्तमम्।।

—मनुस्मृति 4/230

श्रद्धापूर्वक भूमिदान करने वाले को भूमि, स्वर्णदान से दीर्घायु, घर देने वाले को अच्छा घर तथा चांदी देने वाले को अच्छा सुन्दर रुप प्राप्त होता है।

योऽर्चितं प्रतिघृहन्ाति ददात्यर्चितमेव च।
तावुभौ गच्छतः स्वर्गं नरकं तु विपर्यये।।

—मनुस्मृति 4/235

सम्मानपूर्वक दान लेने तथा देने वाले स्वर्ग प्राप्त करते हैं। अश्रद्धा से दान देने से कोई लाभ नहीं होता अपितु नरक ही मिलता है।

किसी वस्तु का दान देते समय मन में श्रद्धा का होना आवश्यक है। बिना श्रद्धा के दान देना व्यर्थ है।

शुद्धता

क्षान्त्या शुध्यन्ति विद्वांसो दानेनाकार्यकारिणः।
प्रच्छन्नपापा जप्येन तपसा वेदवित्तमाः।।

—मनुस्मृति 5/107

विद्वान, शांति चित्त होने से शुद्ध होते हैं, जो बहुत नहीं कर सकते वे दान से शुद्ध होते हैं, गुप्तरुप से पाप करने वाले जप करने से तथा उत्तम वेदों के जानने वाले तप से शुद्ध होते हैं।

मृत्तोयैः शुध्यते शोध्यं नदी वेगेन शुध्यति।
रजसा स्त्री मनोदुष्टा संन्यासेन द्विजोतमः।।

–मनुस्मृति 5/108

मल–मूत्र मिट्टी तथा जल से, मन के चंचल होने पर स्त्री रजस्वला होने पर तथा ब्राह्मण त्यागभाव से शुद्ध होते हैं।

काल की गति

नाभिनन्देत मरणं नाभिनन्देत् जीवितम्।
कालमेव प्रतीक्षेत निर्देशं मृतको यथा।।

–मनुस्मृति 6/45

जीवन से प्रसन्नता तथा मरण से दुःख नहीं मानना चाहिए। यह दोनों अवश्य ही होने हैं। दोनों का अपना समय निश्चित है।

आत्मरक्षा

आपदर्थे धनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि।
आत्मानं सततं रक्षेद्दारैरपि धनैरपि।।

–मनुस्मृति 7/213

विपत्ति के लिए धनसंग्रह करना चाहिए, धन से स्त्री की रक्षा करें तथा धन तथा स्त्री से स्वयं की रक्षा करते रहें।

उन्नति का मार्ग

शुचिरुत्कृष्टश्रुषुर्मृदुवागऽनहंकृतः ब्राह्मणाद्याश्रयो
नित्यमुत्कृष्टां जातिमश्नुते।।

–मनुस्मृति 9/335

पवित्र रहने वाला, परिश्रम करने वाला, मधुर बोलने वाला, नम्र प्रकृति तथा सज्जनों की संगत करने वाला व्यक्ति उच्चजाति का होता है।

ये गुण जिस व्यक्ति में होते हैं वह चाहे किसी भी जाति में उत्त्पन्न हुआ हो उच्च जाति का ही माना जायेगा। उसकी सब जगह प्रशंसा होती है तथा सम्मान प्राप्त होता है।

चारों वर्णों के जीविका के साधन

विद्याशिल्पं भृतिः सेवा गोरक्षं विपणिः कृषिः।
धृतिर्भैक्ष्यं कुसीदं च दश जीवनहेतवः।।

–मनुस्मृति 10/116

पढ़ना–पढ़ाना, कारीगरी, नौकरी, सेवा, पशुपालन, दुकानदारी, खेतीबाड़ी, सन्तोष, भिक्षा तथा ब्याज देना–लेना चारों वर्णों के लिए समान जीविका के साधन हैं। ये कार्य सबके लिए समान हैं, अतः इन्हें कोई भी कर सकता है।

यथा यथा हि सद्वृत्तमातिष्ठत्यनसूयकः।
तथा तथेमं चामुं च लोकं प्राप्नोत्यऽनिन्दितः।।

–मनुस्मृति 10/128

जो निन्दा–स्तुति का विचार किए बिना अच्छा आचरण करता है वह इस लोक में श्रेष्ठता पाता है।

ब्राह्मणस्य तपोज्ञानं तपः क्षत्रस्य रक्षणम्।
वैश्यस्तु तपोवार्ता तपः शूद्रस्य सेवनम्।।

–मनुस्मृति 11/235

ब्राह्मण का तप ज्ञान, क्षत्रिय का रक्षा करना, वैश्य का व्यापार तथा शूद्र का तप

सेवा करना है।

यदि चारों वर्ण अपने कर्त्तव्यों का सत्य हृदय से पालन करें तो उन्हें किसी यज्ञानुष्ठान की आवश्यकता नहीं।

पापों से मुक्त

यथा यथा नरोऽधर्मं स्वयं कृत्वाऽनुभाषते।
तथा तथा त्वचेवाहिस्तेनाऽधर्मेण मुच्यते।।

–मनुस्मृति 11/228

मनुष्य यदि अन्रात्मा से अपनी भूल को स्वीकार करे तो उसे उससे उत्पन्न पापों से छुटकारा मिल जाता है।

कृत्वा पापं हि संतप्य तस्मात्पापात् प्रमुच्यते।
नैवं कुर्यां पुनरिति निवृत्त्या पूयते तु सः।।

–मनुस्मृति 11/230

जो पाप करने के बाद उस भूल को अनुभव करता है, उसका दुःख मानता है तथा पुनः वह पाप न करने का प्रण लेता है वह पाप के बोझ से मुक्त हो जाता है।

आत्मा–परमात्मा

आत्मैव देवताः सर्वाः सर्वमात्मन्यवस्थितम्।
आत्माहि जनयत्येषां कर्मयोगं शरीरिणाम्।।

–मनुस्मृति 12/119

सम्पूर्ण प्राणी आत्मा से उत्त्पन्न हुये हैं। देवता इस शरीर में निवास करते हैं। प्राणी अपने कर्मों के कारण विभिन्न देह प्राप्त करते रहते हैं।